।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।
।। ॐ श्री सद्गुरुनाथ दादाय नमः।।

तत्व बोध

श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था
नई दिल्ली
अंक – 01

श्री साई शक 43
14 दिसम्बर 2024

श्री दत्त जयंती

गुरुबंधु, भगिनियों से,

वं. दादा जी ने श्री साईनाथ महाराज जी के मार्गदर्शन से वर्ष 1956 में इस कार्य की स्थापना की। उत्तर भारत में इस कार्य का विकास श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था के माध्यम से वं. दादा जी की दुआ से हो रहा है।

श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था का अर्थ निम्नलिखित है।

श्री – मतलब ज्ञान

साई – यानी बंधु। साईकल्प मतलब विश्वबंधुत्व की संकल्पना का युग (मानवता युग)।

अध्यात्म – मतलब खुद से यानी मानवीय जीवन से विश्व तक के सभी विषयों का अध्ययन करके ईश्वरीय आनंद की अनुभूति लेना।

संस्था – यानी हम सब आज इकठ्ठा होकर जो कर्त्तव्य करने की कोशिश कर रहे है वह।

हमें अपने जन्म का (जीवन का) ज्ञान होकर, जगत के सभी विषयों का तत्व और सत्व (अच्छा/बुरा) हम समझ पाए और परिवार से लेकर समाज, राष्ट्र एवं जगत के प्रति अपना दैनंदिन कर्त्तव्य यथायोग्य पद्धति से करके विश्वबंधुत्व की भावना निर्माण करने के लिए आवश्यक ज्ञान और शक्ति देने वाली संकल्पना मतलब श्री साईकल्प अध्यात्म संस्था।

हमारे इस गुरुमार्ग में वं. दादा जी को श्री साईनाथ महाराज जी के आशीर्वाद और मार्गदर्शन के साथ तीन पंथों की सिद्धता का लाभ हुआ है। ये तीन पंथ है – श्री दत्त पंथ, नाथ पंथ, सूफी पंथ। वं दादा जी को श्री दत्त पंथ के माध्यम से त्रिगुणात्मक शक्ति प्राप्त हुई। उस शक्ति को कार्यान्वित करने की पद्धति यानी विमोचन, दीक्षा, आदि सिद्धताओं का लाभ नाथपंथ के आशीर्वाद से हुआ। त्रिगुणात्मक शक्ति और नाथ पंथ की प्रखर सिद्धताऐं आज की परिस्थिति में आसानी से हर एक मानव को धारण हो ऐसी पद्धति सूफी पंथ के माध्यम से वं. दादा जी ने साकार की। इन सभी साधन सिद्धताओं का लाभ हमारी आने वाली अनेक पीढ़ियों तक और हमें अपने अनेक जन्मों तक हो इसलिए वं. दादा जी ने श्री शक्तिपीठ, कार्यकेंद्र, प्रतिमाऐं, प्रार्थना, ॐकार साधना, आरती साधना, मुलाकात और कामकाज साधन सिद्ध किए। ये सभी सिद्ध साधन सेवकों के माध्यम से कार्यान्वित करने का प्रबंध और सिद्धता भी इस मार्ग में वं. दादा जी ने की है।

मानव को मानवों की तरह रहने के लिए ईश्वरी शक्ति की आवश्यकता होती है। आज बदलते समय के अनुसार ईश्वर उपासना भी सरल, संक्षिप्त एवं प्रभावशाली होनी चाहिए तभी उसका लाभ मानव ले सकेगा और वो भी किसी मध्यस्त के (पुजारी, मौलवी, father, etc) बिना, इस उद्देश्य से आने वाले सैकडों वर्षों का प्रबंध इस गुरुमार्ग में वं. दादा जी ने किया है।

आज श्री दत्त जयंती है। भगवान दत्त की मूर्ति में तीन मुख होते है और उनमें विश्व के तीनों तत्वों की शक्तियाँ समाविष्ट है। प्रत्येक देवता में कोई एक तत्व प्रधान होता है, लेकिन श्री दत्त प्रभू के तीन मुख मतलब त्रिगुणात्मक शक्ति (power of trinity) है। श्री ब्रह्मा मतलब उत्पत्ति तत्व यानी निर्मिती करने वाली शक्ति। श्री विष्णु मतलब स्थिति तत्व यानी वह शक्ति जिससे हमारी आज की अवस्था में विकास (स्थित्यंतर) होता है। श्री शिव मतलब लय तत्व यानी पूर्णत्व।

श्री दत्त जयंती मनाना मतलब दत्त तत्व का लाभ लेना। इसका अर्थ है – हमारे आस पास हम जो नए, अच्छे गुण देखते है उन्हें अपने जीवन में आत्मसात करना मतलब निर्मिती तत्व। अच्छे गुणों को धारण करके सभी गुणों का विकास करना मतलब स्थिति तत्व। हमारे गुणों का विकास होने के बाद उसका लाभ और आनंद परिवार के या समाज के अन्य व्यक्तियों को मिलता है मतलब उसका पूर्णत्व हुआ यानी लय तत्व। हमारा आचरण, उच्चार, विचार इस प्रकार से हो कि गुरुशक्ति हमारे माध्यम में कार्यान्वित होकर अपने आस–पास आनंद दे सके। ऐसा प्रयास हम सब करते है तभी सही अर्थ में हम श्री दत्त जयंती मनायेंगे।

।। शुभं भवतु।।

Sai Niketan, 5 Jasola Vihar New Delhi – 110025
Website: www.saikalpadhyatmsanstha.com
Email Id: saikalp@gmail.com